कारणों से उनके लिए ऐसा करना उचित न था। इस स्थिति में वे आचार्योचित मान्यता खो बैठे हैं। परन्तु अर्जुन का विचार है कि वे अब भी उसके पूज्य हैं और उन्हें मार कर विषय भोग करना रक्त से कलंकित भोगों को भोगने के तुल्य होगा।

26.1

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।।६।।

न=नहीं; **च एतत्**=यह भी; **विद्मः**=जानते; **कतरत्**=क्या (करना) **नः**=हमारे लिए; **गरीयः**=श्रेष्ठ है; **यत्**=जो; **वा**=अथवा; **जयेम**=हम जीत जायेंगे; **यदि वा**=अथवा; **नः**=हमको; **जयेयुः**=(वे) जीतेंगे; **यान्**=जिनको; **एव**=ही; **हत्वा**=मार कर (हम); **न**=नहीं; **जिजीविषामः**=जीना भी नहीं चाहते हैं; **ते**=वे सब; **अवस्थिताः**=खड़े हैं; **प्रमुखे**=सामने; **धार्तराष्ट्राः**=धृतराष्ट्र के पुत्र।

अनुवाद

हम नहीं जानते कि हमारे लिये क्या श्रेयस्कर है, उन पर विजय प्राप्त करना या उनसे पराजित होना अथवा यह भी नहीं जानते कि युद्ध में हम जीतेंगे या हमको वे जीतेंगे। जिनका वध करके हम जीवित भी नहीं रहना चाहते, वे ही धृतराष्ट्र-पुत्र इस रणभूमि में लड़ने के लिए हमारे सामने खड़े हैं।।६।।

तात्पर्य

अर्जुन यह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि वह क्षत्रिय के धर्मानुरूप युद्ध करके अनावश्यक हिंसा का संकट उपस्थित होने दे अथवा युद्ध से उपरत होकर भिक्षा-वृत्ति से जीवन-यापन करे। यदि वह शत्रु-विजय नहीं करता है तो भिक्षा ही उसके लिए जीवन-यापन करने का एकमात्र साधन रहेगा। साथ में, विजय भी निश्चित नहीं; दोनों दलों में से कोई भी विजयी हो सकता है। यदि उनकी विजय निश्चित भी होती (क्योंकि उनका पक्ष न्यायसंगत है) तो भी युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुए धृतराष्ट्र-पुत्रों के बिना पाण्डवों के लिये जीवित रहना अति कष्टसाध्य होगा। ऐसी परिस्थिति में वह भी प्रकारान्तर से पराजय ही होगी। अर्जुन के इस सम्पूर्ण विवेचन के निश्चित रूप से प्रामाणित होता है कि वह महाभागवत ही नहीं था, वरन् पूर्णतया प्रबुद्ध और जितेन्द्रिय भी था। राजकुल में जन्म लेने पर भी भिक्षा से निर्वाह करने का उसका विचार उत्कृष्ट अनासक्ति का परिचायक है। वह यथार्थ में सदाचारी था, जैसा कि इन गुणों से और अपने गुरु भगवान् श्रीकृष्ण की शिक्षा में उसकी प्रगाढ़ निष्ठा से प्रकट है। इस सबसे अर्जुन सब प्रकार से मुक्ति के योग्य सिद्ध होता है। इन्द्रिय-निग्रह किये बिना ज्ञान-प्राप्ति नहीं होती तथा ज्ञान और भक्ति के बिना मुक्ति नहीं होती। इस प्रकार विपुल लौकिक गुणों के अतिरिक्त अर्जुन इस सम्पूर्ण दैवी गुणावली से भी विभूषित है।